८. कर्मवीर

– *अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*

देखकर जो विघ्न-बाधाओं को घबराते नहीं,
रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं,
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं,
भीड़ में चंचल बनें जो वीर दिखलाते नहीं ।

मानते जी की हैं, सुनते हैं सदा सबकी कही,
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही,
भूलकर वे दूसरे का मुँह कभी तकते नहीं,
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं ।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं,
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं,
आज-कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं,
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं ।

काम को आरंभ करके यों नहीं जो छोड़ते,
सामना करके, नहीं जो भूलकर मुँह मोड़ते,
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहिं तोड़ते,
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते ।

कार्य थल को वे कभी नहिं पूछते 'वह है कहाँ',
कर दिखाते हैं असंभव को वही संभव यहाँ,
उलझनें आकर उन्हें पड़ती हैं जितनी ही जहाँ,
वे दिखाते हैं नया उत्साह उतना ही वहाँ ।

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले-फले,
बुद्धि-विद्या, धन-विभव के हैं जहाँ डेरे डले,
वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले,
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले ।

— o —

परिचय

जन्म : १८३५, आजमगढ़ (उ.प्र.)
मृत्यु : १९४७, आजमगढ़ (उ.प्र.)
परिचय : खड़ी बोली हिंदी साहित्य के विकास में 'हरिऔध' जी की भूमिका नींव के पत्थर के समान है । भाषा पर आपको अद्‌भुत अधिकार प्राप्त था । आपकी रचनाओं में संस्कृत के तत्सम, फारसी-उर्दू शब्दों का प्रयोग बहुत ही आकर्षक है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'वैदेही वनवास', 'प्रिय-प्रवास' (महाकाव्य) 'ठाठ', 'अधखिला फूल' (उपन्यास), 'रुक्मणी परिणय', 'विजय व्यायोग' (नाटक) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत प्रेरक कविता में 'हरिऔध' जी ने बताया है कि सपूतों में कौन-कौन-से गुण होते हैं । इन गुणों से संपन्न कर्मवीर ही देश और समाज को उन्नति के मार्ग पर ले जाते हैं ।

शब्द संसार

विघ्न पुं.सं.(सं.) = संकट, बाधा
उकताना क्रि.(हिं.) = ऊबना
यत्न पुं.सं.(सं.) = कोशिश, प्रयास
वृथा वि.(सं) = व्यर्थ, नाहक
संपदा स्त्री.सं.(सं.) = धन, दौलत,

स्वाध्याय

✼ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

कर्मवीर इनमें परिवर्तन करते हैं

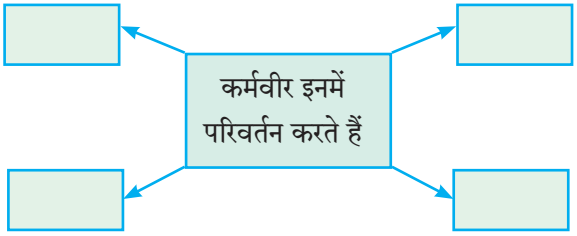

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

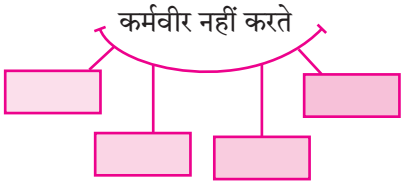

कर्मवीर नहीं करते

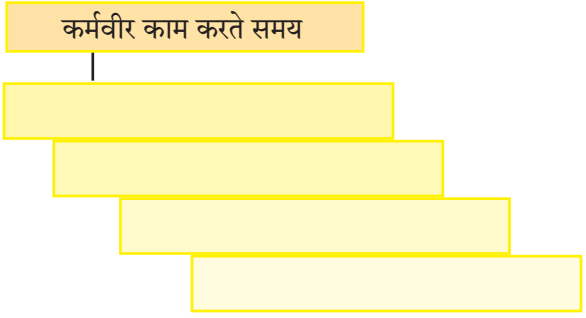

(३) विशेषताएँ लिखिए :

कर्मवीर काम करते समय

(४) कविता में इस अर्थ में आए शब्द लिखिए :

कर्मभूमि – ____________
अकारण – ____________
आकाश – ____________
विश्वास – ____________

(५) कविता की अपनी पसंदीदा चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

मुद्‌दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए :

एक हंस और एक कौए में मित्रता — हंस का कौए के साथ उड़ते जाना — कौए का दधिपात्र लेकर जाने वाले ग्वाले को देखना — ललचाना — कौए का दही खाने का आग्रह — हंस का इनकार — कौए का घसीटकर ले जाना — कौए का चोंच नचा-नचाकर दही खाना — हंस का बिलकुल न खाना — आहट पाकर कौए का उड़ जाना — हंस का पकड़ा जाना — परिणाम — शीर्षक ।

CIIGUZ